Govt. Degree College Bhojpur Moradabad

Name — Madhu Tyagi

Emaie — Madhutyagi 881 @ gmail.com

Stream — Arts

Name of course — B.A II

Name of sub — History

Name of Topic — Akbar

Name of Sub-Topic — Conquests, Rajput Policy

Meta-data key words — Akbar, Rajput Policy

Type — Pdf text

Scanned with CamScanner

अकबर की राजपूत नीति

अकबर की राजपूत नीति मध्यकालीन भारत के इतिहास मे एक महत्वपूर्ण अध्याय बनकर गुजरती है। अकबर के अधीन राज मे हिन्दु कुलीनों के साथ निश्चित सम्बन्ध स्थापित हुए। उत्तर भारत मे मुस्लिम शासन की स्थापना के स्थापना के साथ ही हिन्दु कुलीनों के साथ सम्बन्ध राज्य के समक्ष एक महत्वपूर्ण पक्ष रहा था। तुर्की शासकों के द्वारा हिन्दु कुलीनों को पराजित किया गया. अथवा उन पर सैनिक दबाव बनाकर वार्षिक नजराने के रूप मे एक बड़ी राशि वसूल की जाती थी। इस प्रकार, राज्य के द्वारा किसान एवं हिंदु कुलीन वर्ग दोनों से ही अधिशेष लिया जाता रहा, यद्यपि इन देशी शासकों को आन्तरिक बातो मे स्वायत्तता भी दी जाती थी। परन्तु इस पद्धति का मुख्य दोष यह रहा कि कालान्तर मे राज्य के विरुद्ध हिन्दु कुलीन तथा सामान्य कृषक दोनो के हित एक हो जाते थे। क्योंकि राज्य के द्वारा दोनो का शोषण किया जा रहा था। अतः हिंदु शासकों के समय-२ पर विद्रोह किये जाते तथा इन

विद्रोह मे उन्हे कृषकों का समर्थन भी प्राप्त होता था। लेकिन अकबर इस स्थिति मे बदल परिवर्तन लाया। जब उसने मनसबदारी पद्धति को हिन्दु कुलीनों को भी राज्य से जोड दिया व अधिशेष उत्पादन मे भी उनका अंश निर्धारित कर दिया। इस प्रकार अकबर की राजपूत नीति की व्याख्या तत्कालीन साम्राज्यिक उद्देश्य के अतिरिक्त देशी शासकों के अतिरिक्त मुस्लिम शासकों के क्रमिक विकास के रूप मे भी देखी भी जा सकती है।

अकबर की राजपूत नीति को एक क्रमिक विकास के रूप मे देखा जा सकता है। तुर्की शासकों के अन्तर्गत भी हिन्दु कुलीनों को भी मित्र बनाने का प्रयत्न किया था इस तथ्य को A.u.d देवगिरि के रामचन्द्र के सम्बन्धों मे रेखांकित किया जा सकता है। उसकी पश्च उसी प्रकार अफगान शासकों की सेना मे भी हिन्दुओं को लिया जाता था। उदाहरण के लिए आदिलशाह सूर के अधीन हिन्दु बनिया हेमू को प्रधान मन्त्री का पद मिला था। उसी तरह हिन्दु मुस्लिम कुलीनों के साथ मुस्लिमों के सम्बन्ध अकबर के समय कोई नई घटना नहीं थी, क्योंकि अकबर से पूर्व इस तरह के सम्बन्ध सल्तनत काल मे भी स्थापित हुए थे। उदाहरण के लिए गुजरात के शासक कर्णदेव की पुत्री देवलदेवी का विवाह अलाउद्दीन खिलजी के पुत्र से हुआ था। दूसरी तरफ देवगिरि के यादव शासक की पुत्री से स्वयं विवाह किया था।

अतः ऐसा प्रतीत होता है कि अकबर की राजपूत नीति मे निरन्तरता थी। क्योंकि इसकी पृष्ठभूमि सल्तनकाल मे ही निर्मित हो चुकी थी। किन्तु सूक्ष्म परीक्षण करने पर अकबर की राजपूत नीति मे परिवर्तन के तत्व अधिक महत्वपूर्ण दिखाई देते है। दूसरे शब्दों मे हिन्दु कुलीनों के साथ अब सम्बन्ध मे अकबर ने विशिष्ट नीति अपनायी प्रथम उसने उन्हे महत्वपूर्ण प्रशासनिक पद दिये। उसने उन्हे अपना राज्य वतन जागीर के रूप मे प्राप्त हुआ। फिर अकबर ने उनके साथ वैवाहिक सम्बन्धों पर बल दिया। वस्तुतः उस काल के

सामन्तीय वातावरण मे अधीनस्थ शासक स्वयं अमीरों की वफादारी प्राप्त करना का यह एक महत्वपूर्ण साधन था। फिर भी अकबर ने हिंदु कुलीनों के साथ सम्बन्धों मे वैवाहिक सम्बन्धों को अनिवार्य नही बनाया रणथम्भौर के हाड़ा शासकों के साथ अकबर के वैवाहिक सम्बन्ध नही थे, फिर भी उन्हें राज्य के अन्तर्गत महत्वपूर्ण पद प्रदान किये सबसे बढ़कर अकबर ने वैवाहिक सम्बन्धों मे सामान्य औपचा रिकता पर बल दिया। अर्थात इन वैवाहिक सम्बन्धों को रीति रिवाज व परम्परा के रूप मे विवाहित किया जाता था। इसी प्रकार अकबर ने अपने हरम मे हिन्दु महिलाओं को धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की रहे। इनके सम्बन्ध अपने घर वालो से भी बने

अकबर की राजपूत नीति को एकाधिक कारणों से प्रेरित थी यथा → अकबर को अफगानों की शक्ति को तोड़ने के लिए राजपूत अमीरों की शक्ति को प्रयोग करना चाहता था। बताया जाता है कि जब हुमांयु अपना निवासी जीवन ईरान के शासक तहमास्प प्रथम के काल मे बिता रहा था तो इस अवसर पर शाहतहमास्प ने उसे सुझाव दिया था कि भारत मे अगर उसे एक लड़ाकू जाति (अफगान) को हराना तो उसे दूसरी लड़ाकू जाति (राजपूत) का समर्थन प्राप्त करना चाहिए।

2) अकबर राजपूतों को अमीर वर्ग मे शामिल कर मुगल अमीरों के एकाधिकार को तोड़ना चाहता था

3) राजपूताना क्षेत्र, राजवाड़ा क्षेत्र का व्यापक आर्थिक और सामरिक महत्व था। अर्थात उत्तर पश्चिम की ओर जाने वाला मार्ग इसी क्षेत्र से होकर गुजरता था। इसी प्रकार दक्षिण का क्षेत्र भी इसी से होकर गुजरता था राजवाड़े क्षेत्र मे विशेष

प्रकार की खान उपलब्ध थी, ताँबा जस्ता सिर सीसा आदि
अकबर ने राजपूत राज्यों के प्रति दोहरी नीति अपनायी यह नीति थी पुरस्कार और छड़ी की नीति अर्थात जिन राजपूत राज्यों ने समर्पण किया उन्हें साम्राज्य के अंतर्गत महत्वपूर्ण पद दिये गये और मुगल मनसबदारी व्यवस्था मे शामिल किए, परन्तु जिन राजपूतों ने विरोध किया अकबर ने उन्हें शक्ति के बल पर कुचल दिया।
स्मिथ कहता है कि एक गरीब देश मेवाड़ के पीछे एक बर तलवार लिए दौड़ रहा था यह कुछ भी हो सकता है परन्तु उदारता की नीति नही हो सकती
इसी प्रकार अकबर की राजपूत नीति उसके साम्राज्यवादी उद्देश्यों स्वयं सम्प्रभुता की व्यापक अवधारणा से प्रेरित थी। इस नीति मे राजपूत राज्यों को उनका क्षेत्र वतन जागीर के रूप मे प्राप्त हुआ था परन्तु उत्तराधिकार मे बादशाह से औपचारिक स्वीकृति लेनी पड़ती थी। इस प्रकार उत्तराधिकारियों को अनुमोदन प्रदान कर मुगल शासकों ने सर्वोच्च सत्ता के रूप मे अपनी स्थिति बनायी रखी।
अकबर की राजपूत नीति की सफलता यह रही कि उसने साम्राज्य के प्रबल शत्रु अर्थात हिन्दु कुलीन वर्ग जिसके लिए बर्नी ने भी आक्रोश व्यक्त किया था, को साम्राज्य के अभिन्न मित्र के रूप मे तब्दील कर दिया, इस तथ्य का अंदाजा इसी बात से भी लगाया जाता है कि मुगल साम्राज्य के प्रसार के लिए अथवा उस साम्राज्य की रक्षा के लिए राजपूत योद्धाओं ने काबुल और कन्धार से लेकर सुदूर दक्षिण तक मुगलों के साथ अभियान किए फिर इन सम्बन्धों का लाभ राजपूतों को भी मिला उन्हें एक अखिल भारतीय पहचान मिली। स्वयं दुरस्थ क्षेत्र मे रहने वाले गुमनाम योद्धा साम्राज्य के महत्वपूर्ण पद पर सम्मान मिले।

एक दिलचस्प पहलू यह है कि साम्राज्य के दूर दराज क्षेत्रों में या गोरे मिलने के बाद राजपूत सरदार दूसरे राजपूत वंशों और परिवारों से घनिष्ठ हुए जिनके साथ पहले उनका कोई सम्बन्ध या सम्पर्क नहीं था। राजस्थान तथा पूर्वी और मध्य भारत के राजपूत सरदार अब एक दूसरे से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने लगे इस तरह अकबर के काल में एक सम्बन्धित राज्यव्यवस्था के साथ वर्गीय हितों का एकीकरण हुआ यद्यपि उस समय आधुनिक अर्थ में राष्ट्र की अवधारणा सम्भव नहीं थी। फिर भी मुगल साम्राज्य में राजपूत रजवाड़ों का एकीकरण भारत की भौगोलिक धारणा को एक सम्पूर्ण राजनीतिक इकाई का रूप देने की प्रक्रिया में एक निश्चित अग्रगामी कदम था।

⇒ मुगल शासकों की राजपूत नीति को एक वृहत्तर राजनीति के परिपेक्ष्य में देखे जाने की आवश्यकता है, स्वायत्त, स्वतन्त्र राज्यों एवम् जमींदारों पर अधिपत्य स्थापित करने के लिए इस नीति का सूत्रपात किया। इस व्यवस्था के अन्तर्गत नौकरशाही व्यवस्था को संगठित एवम् उस पर नियन्त्रण करना था और जो शक्तियां स्थापना के लिए उनके बीच शक्तियों का बँटवारा करना था जिससे राजपूती वह सुरक्षित रह सके।

2) मुगल काल में राजस्थान का एक भौगोलिक व सामरिक महत्व था। मुगल शासक इस क्षेत्र पर अपना अधिपत्य करना चाहते थे जिसके पीछे अनेक कारण थे।

(1) राजस्थान गंगा घाटी के क्षेत्रों एवम् पश्चिम क्षेत्रों के बीच एक कड़ी का कार्य करता था।

(2) राजस्थान गंगा घाटी क्षेत्रों एवम् मालवा क्षेत्रों के बीच एक कड़ी का कार्य करता था।

(3) मालवा का सम्बन्ध विदेशों के लिए था और इस पर नियन्त्रण गुजरात के नियन्त्रण ...

(3) 16वी शताब्दी मे इसका विकास भारत के दो मुख्य शासक वर्गो यथा राजपूत एवम मुगलो के प्रत्युतर आप सी हितो के प्रतिउत्तर मे हुआ था। जबकि 17वी शताब्दी मे साम्राज्य के धीमे विस्तार एवम सीमित आर्थिक वृद्धि के परिपेक्ष्य मे हुआ था।

⇒ राजपूत राजाओं एवम शासको की भी मुगलो से आपसी सह सम्बन्धों की चाह थी। राजपूत राजा भारमल ने अपनी पुत्री का विवाह अकबर से किया वह मुगलो के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर राजनीतिक लाभ प्राप्त करना चाहता था।

राजपूत नीति के साकारात्मक पक्ष:-

यह एक विशेष प्रकार के सामंजस्य को प्रस्तुत करता है इसके तहत दो समुदायों के बीच सहयोग स्थापित किया गया और यह निरन्तरता आगे भी बनी रही। अर्थात यदा-कदा उतार चढ़ाव एवम आपसी सहयोग से यह समझौता लम्बे समय तक कायम रहा, इन सम्बन्धों ने राज्य को सुदृढ़ता प्रदान की।

⇒ मुगल और राजपूतों ने एक दूसरे क्षेत्र को प्रभावित किया यह प्रभाव हमे वस्तु कला चित्र कला एवं संगीत आदि से दिखाई देता है राजपूत शैली ने मुगल शैली को प्रभावित किया फिर राजपूत ~~नीति~~ की निष्ठा पर मुगल विश्वास कर सकते थे। मुगलो को एक साहसी योद्धा वर्ग मिला और इन्हे इनका समर्थन मिला और फिर राजपूतों ने मुगल साम्राज्य को विस्तारित करने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया।

राजपूतों का नकारात्मक पक्ष:-

मुगलो एवम राजपूतों का आपसी सम्बन्ध उनके ~~साम्राज्यिक~~ सामाजिक आधार को विस्तृत नही कर पाया रूढ़िवादी तत्व सदैव समान रहे। जिन्होने साम्राज्य के प्रशासन को प्रभावित किया। मुगल इनके सहयोग के बिना सामाजिक

विस्तार का सिद्धान्त नहीं खोज पाये।
राजपूतों ने समय-२ विद्रोह किये एवम विद्रोही तत्वों को सहयोग दिया वे निम्न वर्ग के उत्थान को नहीं देख सकते थे फिर राजपूतों ने सिक्ख सतनामी आदि ने मुगलों से जुड़ने मे बाधा का कार्य किया (विस्तार) सामंजस्य की क्रिया प्रतिकूल से बाधित हुई।
c) यह समझौता दो शासक वर्गों के बीच था इसलिए यद्यपि समझौते ने नीचे के वर्गों को प्रभावित नहीं किया दोनों पक्षों मे रूढ़िवादिता एवम सामाजिक तनाव बने रहे वैवाहिक सम्बन्ध केवल उच्च वर्गों मे स्थापित किये गये और ये भी एक तरफा क्रियान्वित किये गये और इसके बाद की सामाजिक रूढ़िवादिता कायम रखा इस प्रकार यह समझौता एक समन्वित धर्मनिरपेक्ष राज्य को जन्म नहीं दे सके

राजनीतिक > राजपूत राजनीतिक योद्धा थे और मुगल इसी गुण को अपने हितों मे इस्तेमाल करना चाहते थे।

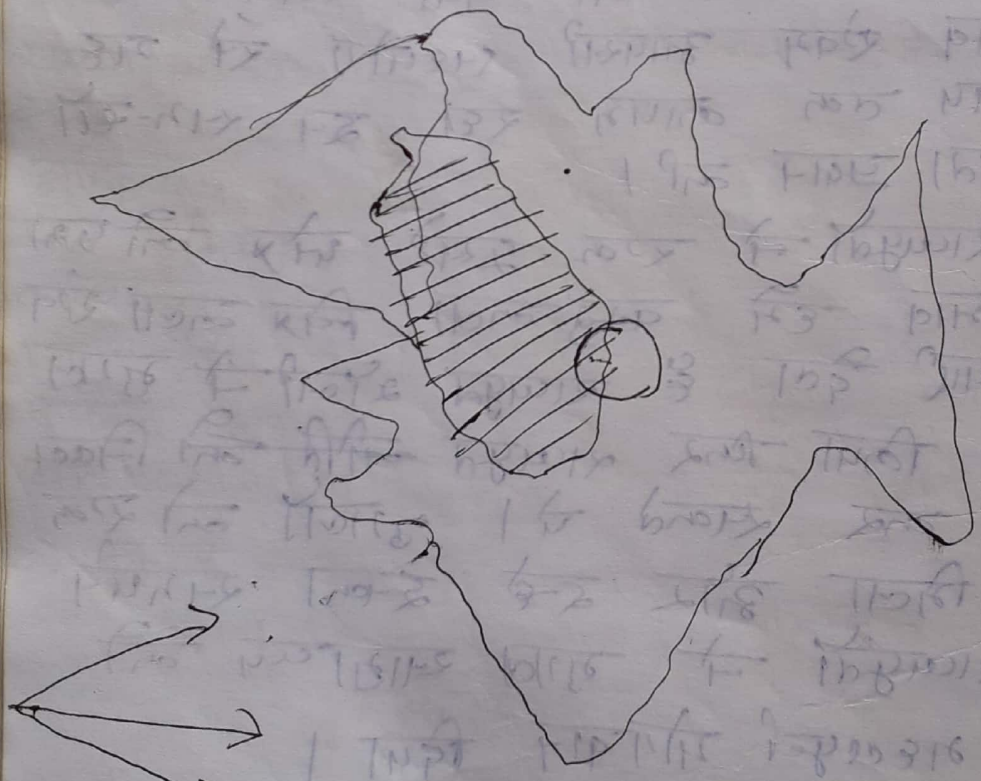

अकबर की राजपूत नीति

- → अफगानों के वर्चस्व को तोड़ना।
- → मुगल अमीरों के एकाधिकार को प्रतिसन्तुलित करना।
- → हिन्दू कुलीनों को राज्य से प्रत्यक्ष तौर पर संलग्न करना
- → राजपूतों की सेवाओं से साम्राज्य विस्तार को प्रोत्साहन देना।
- → रूढ़िवादी तत्वों को हतोत्साहित करना।

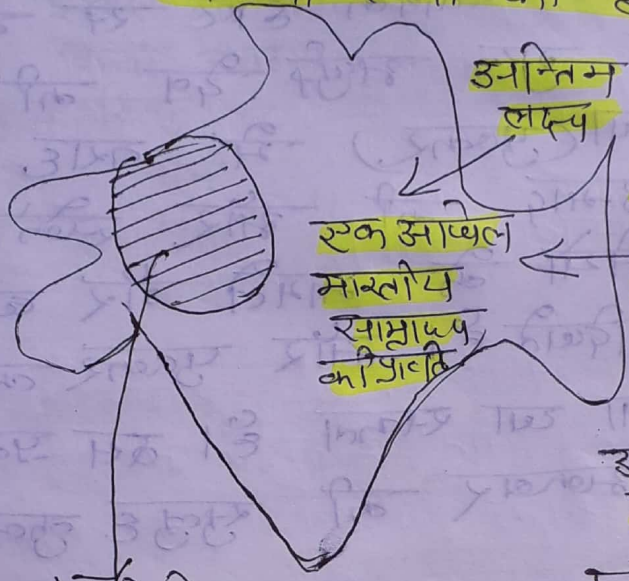

प्राप्ति

राजपूतों को मुगलों का सहयोगी बनाना चाहता है

- मुगल अमीरों के वर्चस्व को तोड़ना।
- हिन्दू वर्ग को शासन से जोड़कर समन्वय साम्राज्य सशक्त करना।
- अफगानों के वर्चस्व को तोड़ना।

राजपूताना की भौगोलिक दृष्टि से महत्वपूर्ण अवस्थिति

⇒ उत्तर दक्षिण के बीच कड़ी

⇒ आर्थिक एवम सामरिक महत्व की स्थिति

⇒ राजपूत एक महान योद्धा वर्ग की विशेषता से परिपूर्ण

अकबर एक दूरदर्शी शासक था उसने राजपूताना के महत्व को वास्तविक दृष्टि से पहचाना

↓

राजपूत नीति क्रियान्वित की